नाम:- विजय कुमार झा (सहायक प्राध्यापक) तारकेश्वर नारायण अग्रवाल शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय हरिगांव भोजपुर

विषय:- C-2

प्रकरण:- पाठ्यचर्या के अर्थ परिभाषा एवं आवश्यकता

अर्थ

पाठ्यचर्या का शाब्दिक अर्थ : पाठ्यचर्या दो शब्दों से मिलकर बना है- पाठ्य और चर्या । पाठ्य का अर्थ है " पढ़ने योग्य " अथवा " पढ़ाने योग्य " तथा चर्या का अर्थ है ' नियमपूर्वक अनुसरण ' । इस प्रकार पाठ्यचर्या का अर्थ हुआ- पढ़ने योग्य अथवा पढ़ाने योग्य विषय वस्तु और क्रियाओं का नियम पूर्वक अनुसरण । (Curriculum) पाठ्यचर्या को अंग्रेजी में Curriculum कहते हैं । Curriculum की उत्पत्ति लैटिन शब्द " Currere " से हुई है जिसका अर्थ Run होता है । इस संदर्भ में पाठ्यचर्या का अर्थ- किसी निश्चित लक्ष्य तक पहुंचने के लिए मार्ग पर दौड़ना होता है ।

परिभाषा

परिभाषा निम्न प्रकार है

कनिंघम के अनुसार- " पाठ्यचर्या यंत्र (साधन) है जो कलाकार (शिक्षक) के हाथों में अपनी सामग्री (छात्र) को अपने आदर्शों (उद्देश्यों) के अनुसार अपने विद्यालय में कोई रूप प्रदान करने के लिए होता है ।

" फ्रोबेल के अनुसार- " पाठ्यचर्या को मानव जाति के समस्त ज्ञान और अनुभव का सार समझना चाहिए ।

" माध्यमिक शिक्षा आयोग के अनुसार- " पाठ्यचर्या का अभिप्राय विद्यालय में पारस्परिक विधि से पढ़ाए जाने वाले केवल शैक्षिक विषयों से नहीं है अपितु इसमें अनुभव की बात समग्रता शामिल है जो बालक को विद्यालय में प्राप्त होता है ।

पाठ्यचर्या के बारे में कहा जाए तो विद्यालय के अंदर होने वाले सभी प्रक्रिया पाठ्यचर्या के अंतर्गत आती है । इन सभी प्रक्रिया में शिक्षक एवं छात्र दोनों परस्पर सम्मिलित होते हैं । जैसे : - जब कोई बालक विद्यालय में आता है तो उसके द्वारा या उसके साथ होने वाली सभी प्रक्रिया (पठन - पाठन , खेलकूद , हस्तकला , संगीत , सफाई , प्रार्थना , मध्यान भोजन इत्यादि) सभी प्रक्रिया पाठ्यचर्या के अंतर्गत आती है ।

पाठ्यक्रम की आवश्यकता

- (1) पाठ्यक्रम के द्वारा ही स्पष्ट किया जाता है कि विद्यालय में विभिन्न स्तरों पर किस-किस विषय का ज्ञान छात्रों को दिया जायेगा। इस प्रकार पाठ्यक्रम से पाठ्यसामग्री का निर्धारण होता है जिससे शिक्षण-प्रक्रिया को सुनियोजित करने में सहायता मिलती है।
- (2) पाठ्यक्रम के निश्चित होने से अध्यापक को यह पता लगता है कि पूरे शिक्षण-सत्र के दौरान उसे किस कक्षा विशेष को क्या व कितना पढ़ाना है।

- (3) छात्रों को भी यह पता चल जाता है कि किसी कक्षा विशेष में उन्हें पूरे शिक्षण-सत्र के दौरान क्या-क्या पढ़ना व सीखना है।
- (4) पाठ्यक्रम माता-पिता का मार्गदर्शन करता है।
- (5) पाठ्यक्रम की सहायता से अध्यापक कक्षा-शिक्षण के दौरान अपने शिक्षण-लक्ष्यों से नहीं भटकता है।
- (6) पाठ्यक्रम की सहायता से छात्रों की योग्यता का मूल्यांकन एक निश्चित समय के पश्चात् किया जा सकता है।
- (7) पाठ्यक्रम पूरे समाज व देश में शिक्षा के सामान्य स्तर को बनाए रखने में सहायक है।
- (8) परीक्षण के प्रश्नपत्र का निर्माण करने हेतु पाठ्यक्रम एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाता है।
- (9) पाठ्यपुस्तकों का निर्माण पाठ्यक्रम के आधार पर ही होता है।
- (10) पाठ्यक्रम की सहायता से मुख्याध्यापक या निरीक्षक अपने विद्यालय की शैक्षिक प्रगति का निरीक्षण कर सकते हैं।